बहू कैसी ?

रचयित्री
आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
सागर (म. प्र.)

- **कृति** : बहू कैसी ?
- **रचयित्री** : आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी
- **सम्पादक** : ब्र. डॉ. भरत जैन
- **संस्करण** : द्वितीय, दिसम्बर, 2009
- **आवृत्ति** : 3300
- ISBN : 978-81-909449-3-9
- **सर्वाधिकार** : प्रकाशकाधीन
- **लागत मूल्य** : 7/-
- **प्राप्ति स्थान** : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  सागर (म. प्र.)
  094249-51771
- **मुद्रक** : विकास आफसेट, भोपाल

प्रकाशकीय

बहू कैसी? शीर्षक की यह कृति नाटकीय शैली में एक पारिवारिक घटना है, जो आज लगभग कई घरों में देखी जा सकती है। सास की बहू से पटरी नहीं बैठना, बहू की सास से पटरी नहीं बैठना, परिवार वालों को उपेक्षित करने का कार्य बहू द्वारा किया जाना, ऐसे हालातों में घर का वातावरण दूषित देखा जा सकता है, फिर हम कैसे धर्मध्यान कर सकते हैं, सारा दिन टेंशन में ही रहता है। बहुओं को अपने घर को कैसे स्वर्ग बनाना है ? अपने कर्त्तव्यों को कैसे निभाना है ?

नाम के अनुरूप इस कृति की समाज में अत्यन्त आवश्यकता थी। इस आवश्यकता की पूर्ति परम वंदनीय आर्यिका श्री विज्ञानमती माताजी ने करके अनभिज्ञ-भ्रमित परिवार की पढ़ी-लिखी घमण्डी बहुओं को दृष्टि में रखकर उनके ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। आये दिन सुनने में आता है कि उस घर की बहू ने ससुराल में जाने से इंकार कर दिया, तब ऐसा लगता है कि आज समाज में क्या हो रहा है ? ये दुष्प्रवृत्ति कब दूर होगी, लेकिन इस पुस्तक को जो एक बार पढ़ लेगा, मैं दावे से कह सकता हूँ कि वह ऐसा कृत्य करने की सोच भी नहीं सकता।

इस कृति की लेखिका परम वंदनीय आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी तथा आर्यिका संघ के चरणों में विनम्र वंदामि....

ब्र. डॉ. भरत जैन

आर्यिका श्री द्वारा रचित कृतियाँ

चेतन कृतियाँ :

आर्यिका श्री वृषभमती माताजी, आर्यिका श्री आदित्यमती माताजी, आर्यिका श्री पवित्रमती माताजी, आर्यिका श्री गरिमामती माताजी, आर्यिका श्री संभवमती माताजी, आर्यिका श्री वरदमती माताजी,

अचेतन कृतियाँ :

तत्त्वार्थसूत्र विधान, चौंसठ ऋद्धि विधान, सम्मेद शिखर विधान, शीलमञ्जूषा, तत्त्वार्थ मञ्जूषा, संस्कार-मञ्जूषा, भोगोपभोग परिमाणविधि, दोहा शतक, भक्तिपुंज मंजूषा, गुरु स्तुति, कल्पद्रुममण्डल विधान, पलायन क्यों ? बड़ेबाबा विधान, उपसर्गहर रक्षाबंधन विधान, भूषणद्वय महाकाव्य, सच्चे देव का स्वरूप, चौबीस ठाणा प्रश्नोत्तरी।

बहू कैसी?

पात्र परिचय

शैलेष	:	ससुर (सेठ)
शैला	:	सासू (सेठानी)
बबलू	:	छोटा बेटा (देवर)
रानू	:	छोटी बेटी (ननद)
ऋषीश	:	श्रेष्ठी पुत्र (पति)
सुयशा	:	बहू (ऋषीश की पत्नि)
मनीषा	:	पड़ोसी (सेठानी)
शीलचंद	:	सेठ (सुयशा के पिता)
संध्या	:	सेठानी (सुयशा की माँ)
अनन्त	:	बड़ा बेटा (सुयशा का बड़ा भाई)
ममता	:	भाभी (सुयशा की)
अरविन्द	:	सुयशा के जीजाजी
यशस्वी	:	बड़ी बेटी (सुयशा की बड़ी बहन)
रिंनि	:	छोटी बहिन (सुयशा की)
नन्दिनी	:	सुयशा की सहेली

एक सेठ की पुत्री (सुयशा) बहुत लाड़ली है। उसकी शादी के लिए सभी दहेज की सामग्री इकट्ठी कर रहे हैं। कोई बर्तन ला रहा है, कोई कपड़े की पेटी जमा रहा है, कोई आभूषणों को तैयार कर रहा है। एक तरफ बेटी की माँ बेटी के संस्कारों को स्थायी बनाने के लिए, कुछ जीवन विकास की सामग्रियाँ इकट्ठी कर रही है। वह दहेज की सामान्य सामग्री के साथ-साथ एक जिनवाणी, एक माला ....। आदि चीजें रख रही हैं। शादी के बाद बेटी विदा होकर ससुराल पहुँच गई है।

ससुराल

प्रातःकाल लगभग 7 बज रहे हैं। बहू अभी तक उठी नहीं है ऐसा करते-करते बहू को दो-तीन दिन बीत गए।

सास : बेटी रानू, उठो सूरज निकल गया है कब तक सोती रहोगी।

बेटी : हाँ, माँ अभी उठती हूँ।

सास : क्यों री रानू! हम तुम्हारे नौकर हैं क्या, जो उठकर काम करते रहें और तुम सोती रहो।

बेटी : हाँ, माँ लाओ मैं सारा काम निपटा देती हूँ।

सास : बेटा बबलू! उठो चाय पी लो, चाय तैयार हो गयी है। (चाय का नाम सुनकर बहू उठती है और आकर कुल्ला करके चाय पी रही है।)

बबलू : माँ, तुम भी इतनी जल्दी क्यों मचाती हो? अभी तो साढ़े सात बजे हैं मुझे तो 10 बजे ऑफिस जाना है।

सास : (बहू को देखकर) वा बेटा वा, आज तो तुम बहुत जल्दी उठ गए, थोड़ा देर से उठते तो भी काम चल जाता।

ऋषीश : प्रिये! थोड़ा जल्दी उठ जाया करो, मम्मी अकेली-अकेली ठंड में काम करती रहती हैं। उसके साथ तुम भी थोड़ी हेल्प करवा दिया करो। काम भी जल्दी हो जायेगा और माँ भी ज्यादा नहीं थकेगी।

सुयशा : मैं जल्दी नहीं उठ सकती, मैं अपने घर पर भी साढ़े सात बजे के पहले कभी नहीं उठी थी, फिर यहाँ छह बजे और साढ़े छः बजे कैसे उठ सकती हूँ ? मैंने कोई जल्दी उठने के लिए शादी नहीं करी। मैंने तो ऐशो आराम की जिंदगी बिताने के लिए शादी की है।

ऋषीश : सुयशा, क्या थोड़ा जल्दी उठ जाने से जीवन का आनन्द समाप्त हो जाता है? क्या इससे तुम्हारा ऐश कम हो जायेगा ? अरे माँ की हेल्प करने से तो तुम्हें और ज्यादा आनन्द प्राप्त होगा।

(दो-चार दिन के बाद)

शैला (सास): ओ री रानू, बेटी रानू, रानू अब तो उठ जा। सोती ही रहेगी या उठकर कुछ काम भी करेगी। मैंने तो क्या-क्या सोचा था। तूने मेरी पूरी कल्पनाओं पर पानी फेर दिया। अरे, इससे तो अच्छा था जब तू नहीं आई थी तब (भी) मैं ज्यादा सुखी थी। तू क्या घर आ गई मेरे जीवन में तो एक आफत ही खड़ी हो गयी।

(बहू इन सब बातों को सुनकर गुस्से से कमरे से बाहर आती है)

बहू : मम्मी जी, आज तो आप बहुत चिल्ला रही हो। क्या हुआ कोई खेत पर जाना है या अभी ड्यूटी पर जाना है। समझ में नहीं आता, न स्वयं शान्ति से रहती हो और न सामने वाले को रहने देती हो।

(बहू का उत्तर सुनकर सास सन्न रह जाती है उसकी आँखों में आँसूओं की बूँद तैरने लगती हैं।)

शैलेष : क्यों री रानू की माँ, तुम्हें अभी बोलने की भी सभ्यता नहीं है तुम्हें अभी तक इतना ही नहीं मालूम की बड़ों से कैसे बोलना चाहिए (गुस्से में) क्यों रे बबलू तू इतना पढ़ा लिखा है तो भी तुझे बोलने की तमीज नहीं है, तू भी आजकल बहुत सिर पर चढ़ गया है। आज के बाद यदि उल्टा-सीधा कुछ बोला तो ठीक नहीं होगा।

(ससुर की बात को सब चुपचाप सुनते रहे)

ऋषीश : (गुस्से में) सुयशे! आज तो तुमने बहुत गलत किया। तूने माँ पर गुस्सा करके अच्छा नहीं किया। तुझे चिल्लाते देख मुझे तो ऐसा लगा कि तेरे गाल पर 2-4 चाटे जड़ दूँ। लेकिन फिर भी मैंने यह सोचकर गम खा लिया कि एक बार और समझाकर देखता हूँ। अबकी बार समझाने पर भी यदि नहीं मानी तो...

सुयशा : (रोने का एक्शन करती हुई) हाँ, हाँ आप तो अपनी माँ का ही पक्ष लेंगे, मेरे को चिल्लाते हुए तो आपने देख लिया लेकिन मम्मी ने क्या-क्या कहा वह सुना आपने, जब देखो तब मुझे ही डाँटते रहते हो, मम्मी से तो कभी कुछ नहीं कहते हो और ऐसे ही तुम मुझे डाँटते रहे तो ....।

ऋषीश : ज्यादा रोने चिल्लाने की आवश्यकता नहीं है, तुम्हें मेरी माँ की

इज्जत भी करनी होगी और घर का काम भी करना होगा और कान लगाकर सुनलो, आगे कभी ऐसा किया तो इस घर में रहना बहुत मुश्किल होगा।

(इस प्रकार कहता हुआ ऋषीश कमरे से बाहर निकल जाता है।)

(सुयशा ऋषीश के चले जाने के बाद अपने आप बड़बड़ाती है) अरे मुझे नहीं रहना ऐसे घर में, क्या रखा है यहाँ इससे तो अच्छा है मैं पापा के यहाँ जाकर रहूँ तो कम से कम बार-बार ये डाँट तो नहीं सुननी पड़ेगी। (रोती हुई) हाय राम मैं शादी करके कैसे घर में फँस गई ? (जोर-जोर से रोती हुई कमरे का दरवाजा बन्द कर लेती है) अरे भगवान्, अब मुझे इस घर से निकाल ले। ये घर तो नरक से भी ज्यादा दुःखदायी है। (चुप होकर मन में सोचती हुई)

अरे, इस प्रकार कायर बनने से काम नहीं चलेगा। अबकी बार यदि इनने कुछ कहा तो मैं भी थोड़ा कड़वा जवाब दे दूँगी। ताकि आगे कभी कुछ कहने का साहस नहीं करें। इस प्रकार विचार करती हुई चुप हो जाती है।

(पर्दा गिर जाता है)

एक दिन बहू कुछ काम कर रही थी, उसकी एक गिलास से ठोकर लग जाती है। ग्लास लुड़क कर गिर जाता है और फूट जाता है। वहीं पास में ससुरजी बैठे थे, ग्लास फूटा देखकर बोले -

ससुर : बेटी सुयशा! थोड़ा देखकर काम करो, देखो तुम्हारी ठोकर लगने से ग्लास फूट गया।

सुयशा : (तनक कर) हाँ पापाजी, मैं तो देखकर ही चल रही थी। मैं कोई अन्धी थोड़ी हूँ, जो मुझे इतना बड़ा गिलास नहीं दिखे। जिस मूर्ख ने ये गिलास बीच में रखा उसे कहो, उसे डाँटो। मुझे डाँटने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(इस प्रकार कहती हुई अपने कमरे की ओर चली जाती है)

(ससुर भी चुपचाप उठकर घर से बाहर निकल जाते हैं)

एक दिन मंदिर में विधान का कार्यक्रम था, भैयाजी प्रवचन करने के लिए आये थे। मम्मी, बड़ी भाभी, रानू आदि सभी तैयार हो चुके थे, लेकिन छोटी भाभी अभी तक अपने कमरे से बाहर नहीं आई थी।

रानू : (जोर से आवाज लगाती है)भाभी, सुयशा भाभी जल्दी चलो भैयाजी के प्रवचन चालू हो चुके होंगे, जल्दी चलो मम्मी, बड़ी भाभी सभी आपका इंतजार कर रहे हैं।

सुयशा : (कमरे से बाहर निकलकर बालकनी में आकर)तनकती हुई-दीदी इतना क्यों चिल्ला रही हो ? मुझे नहीं जाना मंदिर-वंदिर, जिनको जाना है चले जाओ। करो धर्म सब जनें, तुम लोग धर्मात्मा हो, इसलिए जाओ मंदिर। मुझे नहीं करना धर्म, नहीं सुनने मुझे प्रवचन, नहीं बनना मुझे बगुला भक्त जाओ तुम लोग चले जाओ।

सबका मूड़ खराब हो जाता है, कोई भी मंदिर नहीं जाता है। घर का माहौल एक दम बिगड़ जाता है, आज से सभी लोग सुयशा से बोलना लगभग बन्द कर देते हैं अति आवश्यकता पड़ने पर ही उससे बोलते हैं।

(एक दिन सुयशा बाजार जा रही थी रास्ते में एक पड़ोसिन उसे आवाज लगाती है)

पड़ोसिन : ओ री बहूरानी, बहूरानी कहाँ जा रही हो ? जरा इधर आना।

सुयशा : (पड़ोसी के घर जाती है) आंटीजी जयजिनेन्द्र। मैं बाजार जा रही हूँ कितने ही दिन से घर में फल नहीं आये थे, सो सोचा आज मैं ही जाकर फल खरीद ले आती हूँ।

पड़ोसिन : अच्छा बेटी, थोड़ा मेरा भी एक काम करती आना, मेरे लिए भी एक साबुन का पैकेट खरीदकर लेती आना, लो 50 रुपये का नोट है, जितना बचे उसके मुझे भी थोड़े अमरूद लेती आना।

सुयशा : आंटीजी, मैं इस रास्ते से नहीं जाऊँगी, मैं तो उस रास्ते से जाऊँगी उधर साबुन नहीं मिलती है, इसलिए मैं आपका काम नहीं कर पाऊँगी।

पड़ोसिन : अरे बेटी, थोड़ा उधर से निकल जाना। मेरे घर में कोई साबुन लाने वाला नहीं है, तू लेती आयेगी तो तेरा बहुत-बहुत उपकार मानूँगी।

सुयशा : आँटी, ऐसे तो कई लोग उपकार मानते हैं, जब कभी गिड़गिड़ाते रहते हैं, मैं कब-कब किस-किस के काम करती फिरूँगी।

(एक बार बड़ी भाभी और रानू रसोई घर में काम कर रही थी तभी छोटी भाभी आती है)

रानू : छोटी भाभी थोड़ा बेसन का डिब्बा उठा देना।

सुयशा : रानू, तू तो आजकल बहुत आर्डर चलाने लगी है। क्या तुम्हारे पैर टूट गए हैं, उठकर क्यों नहीं उठा लेती........। इस प्रकार कहती हुई फनककर निकल जाती है।

ऋषीश : प्रिया सुयशा, देखो तुम्हारी जैसी सभ्य नारी के लिए ऐसा व्यवहार अच्छा नहीं लगता। तू तो आजकल सब ही के साथ तुच्छ व्यवहार करने लगी हो। यदि तुम रानू, मम्मी, भाभी आदि का छोटा-मोटा काम कर दोगी तो घिस थोड़ी जाओगी। पूरे दिन हम अपने भी तो कितने काम करते रहते हैं।

(सुयशा चुपचाप नीची दृष्टि करके सुनती रहती है।)

ऋषीश : मेरी प्राणप्यारी, मैं तुझे प्राण से भी ज्यादा चाहता हूँ। तुझे कोई डाँटता है, कोई कुछ कहता है तो मुझे बहुत बुरा लगता है, लेकिन मैं मम्मी आदि को कुछ कह भी तो नहीं सकता क्योंकि उसमें तुम्हारी भी तो गलती रहती है। प्लीज, तू थोड़ा अपना व्यवहार सुधार ले, मेरी भी जिंदगी बन जायेगी और तुम्हारी भी जिंदगी अच्छी रहेगी।

सुयशा : हाँ, ऋषीश, मैं भी चाहती हूँ कि सब लोग मुझे प्यार की दृष्टि से देखें, लेकिन क्या करूँ, सब लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं कि मैं उनके साथ ऐसा व्यवहार करने के लिए मजबूर हो जाती हूँ।

फिर बार-बार घर में ऐसा ही माहौल बनता रहता है, सुयशा-कभी मम्मी से तो कभी रानू से कभी बड़ी भाभी से तो कभी स्वयं

ऋषीश से ही लड़ती रहती है।

ऋषीश : गुस्से में सुयशा, निकल जा मेरे घर से, तेरी जैसी मूर्खा पत्नि मुझे नहीं चाहिए, इससे अच्छा तो यह है कि मैं बिना पत्नी के ही रहूँ। तेरे कारण से मुझे पूरे परिवार वालों की कड़वी-मीठी बातें सुननी पड़ती हैं, यहाँ तक आस-पास पड़ोस तक के ताने सुनने पड़ते हैं।

सुयशा : (जोर से चिल्लाती हुई) ऋषीश, मैं भले ही तुम्हारा घर छोड़कर चली जाऊँगी, लेकिन मैं कोई नौकरानी नहीं हूँ, जो पूरे घर वालों की सेवा करती रहूँ, उनके कपड़े धोती रहूँ, झाड़ू-पौंछा करती रहूँ, मैंने आपसे शादी की है, मैं आपकी पूरी सेवा कर सकती हूँ, आपके पैर दबा सकती हूँ, यहाँ तक आपकी ट्वाइलेट भी उठाकर फेंक सकती हूँ, आपके साथ जंगल में भी रह सकती हूँ, भूखी रह सकती हूँ, लेकिन मैं दुनिया भर के लोगों की सेवा नहीं कर सकती।

आप मेरी एक बात मान लें, तो आप और मैं, दोनों ही सुखी हो जायेंगे तथा आपके मम्मी-पापा, रानू भाभी आदि भी सभी सुखी हो जायेंगे।

ऋषीश : हाँ, बोलो, आपकी कौन-सी फरमाइस है, जिसको मैं मान लूँ, तो आप सुखी हो जायेंगी।

(ऋषीश का मूड सुधरता देख सुयशा धीरे से बोलती है)

सुयशा : अजी, अपन ऐसा करते हैं कि कहीं एक मकान किराये पर लेकर अलग रहने लगें तो ये सब आफद समाप्त हो जायेगी।

ऋषीश : (एकदम जोश में) वाह री मूर्खे! तूने भी क्या सलाह दी ? मैं एक रानी को खुश रखने के लिए अपने पूरे परिवार को छोड़कर अलग रहूँ। बिल्कुल निर्जन वन जैसे अलग घर में। नहीं, नहीं चुप हो, बिल्कुल चुप, मैं अब तेरा एक शब्द भी नहीं सुन सकता।

(इस प्रकार कहते हुए बाहर निकल जाती है) सुयशा रोती है और अपने मन ही मन में यह निर्णय कर लेती है कि अब मैं इस घर में नहीं रहूँगी बस अब मुझे भैया को बुलाकर पापा के यहाँ

जाना है।

S.T.D पर जाकर पापा को फोन करती है। रोती-रोती ससुराल वालों की बुराई बताती है, भैया को भेजने के लिए कहती है।

(पीहर में मम्मी-पापा, भैया-भाभी आदि बैठकर विचार कर रहे हैं)

सेठजी : देखो सेठानी आज सुयशा का फोन आया था, फोन पर भी बहुत रो रही थी। उसने कहा है कि-विनीत को लेने के लिए भेज दो। मैं यहाँ बहुत दुखी हूँ, मुझे यहाँ से जल्दी अपने घर ले जाओ।

संध्या : आपने उससे पूछा नहीं कि उसको क्या तकलीफ है, ससुराल वाले तो बहुत अच्छे हैं, हो सकता है उसको आपकी याद आ रही होगी, इसलिए आना चाहती है।

सेठजी : नहीं, नहीं ऐसा तो नहीं लग रहा था कि उसको अपनी याद आ रही हो। मुझे तो उसकी बातों से ऐसा लग रहा था कि घर में बड़ा भारी झगड़ा हुआ हो। उसने छुप कर फोन करके लेने के लिए बुलाया है।

सेठानी : यदि आपको ऐसा लगा है तो हमें विनीत को बिल्कुल नहीं भेजना चाहिए, क्योंकि यदि हम अभी उसको ले भी आयेंगे तो आखिर कितने दिन रखेंगे, उसको रहना तो जीवन भर ससुराल में ही है।

सेठजी : हाँ, बात तो सही है कि उसे जीवन भर ससुराल में ही रहना है लेकिन उसका रोना सुनकर ऐसा लगा कि मैं ही अभी जाकर ले आऊँ।

रिंनि : हाँ, पापाजी आप ही जाकर ले आओ, मुझे भी दीदी की बहुत याद आ रही है।

विनीत : नहीं, पापा मुझे तो जो मम्मी कह रही है, वह ठीक लग रहा है, आखिर दीदी को रहना तो ससुराल में ही पड़ेगा और यदि ससुराल के झगड़े में अपन ने बुला लिया तो बार-बार उसको बुलाना पड़ेगा।

ममता : हाँ, पापाजी, भैयाजी बिल्कुल सही कह रहे हैं। खुशी-खुशी

भले ही अपन दीदी को दस बार बुला लें, लेकिन झगड़े के कारण तो एक बार भी नहीं बुलाना चाहिए। अपन नहीं बुलाएँगे तो दीदी अपने आप ससुराल वालों के अनुसार ढल जायेंगी। थोड़ा माहौल ठीक हो जाने पर भैया को भेजकर दीदी को बुलवा लेंगे।

(इस प्रकार सलाह करते हुए सभी अपने-अपने काम में लग जाते हैं)

सुयशा के जब दो-चार बार फोन आ जाते हैं, वह फोन पर इस ढंग से कहती है कि मजबूर होकर सेठजी विनीत को भेज देते हैं।

(विनीत सुयशा की ससुराल पहुँचता है।)

सेठानी : अरे बेटा, बिना कुछ समाचार दिए कैसे आ गए ? हमें तो पता ही नहीं था कि तुम आ रहे हो, पता होता तो बबलू को बस स्टेण्ड पर भेज देती।

विनीत : कुछ नहीं मम्मीजी, ऐसे अचानक आने का विचार बन गया, इसलिए सूचना नहीं दे पाया।

सेठानी : अच्छा, आओ जल्दी से फ्रेस होकर दूध पीलो और नाश्ता कर लो सफर से थक कर आये हो। विनीत फ्रेस होकर दूध पीता है नाश्ता करता है और बबलू के साथ बाजार निकल जाता है।

(भोजन के बाद विनीत कहता है)

विनीत : मम्मी जी, मैं दीदी को लेने आया हूँ। कई दिनों से पापा सोच रहे थे कि मैं दीदी को लेने जाऊँ लेकिन समय ही नहीं मिल पा रहा था। हम लोगों को दीदी की बहुत याद आ रही थी।

सेठानी : अच्छा तो आप दीदी को लेने आये हैं।

विनीत : हाँ, मम्मीजी।

सेठानी : (सुयशा को आवाज लगाती है) छोटी बहू, बेटी इधर आओ।

सुयशा : (जल्दी आ जाती है) जी, मम्मीजी।

सेठानी : बेटी तुम्हारे भैया तुम्हें लेने आये हैं, अपने कपड़े वगैरह रखकर अटैची तैयार कर लो। शाम को ही निकलने की कह रहे हैं।

(सुयशा कमरे में जाकर अटैची तैयार कर लेती है, अपने मूल्यवान आभूषण तथा अच्छी वाली सभी साड़ियाँ रख लेती हैं। विनीत

और सुयशा अपने घर पर आ जाते हैं।)

(सुयशा पापा की गोदी में पड़कर रोती है।)

सेठजी : (गोदी से उठाकर आँसू पौंछते हुए) बेटी, इतनी क्यों रोती हो, क्या हो गया रोओ नहीं, चुप हो जाओ, चुप होकर सब बताओ।

(इस प्रकार कहते हुए पापा की भी आँखों में पानी भर आता है।)

सुयशा : नहीं, पापा, नहीं मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगी। आप हाँ कहो कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगी (रोती-रोती) मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। अब मैं कभी वहाँ नहीं जाऊँगी।

सेठजी : बेटी रोओ नहीं, तुम्हें अभी कह कौन रहा है कि तुम वहाँ जाओ एक बार चुप हो जाओ वहाँ जाना है या नहीं जाना है यह सब अपन बाद में सोचेंगे। एक बार चुप होकर पूरी बात बताओ।

सुयशा : नहीं, पापा आप कुछ भी कहो, मैं उस नरक में अब नहीं जाऊँगी।

(उसका रोना देखकर भैया, बहिन, मम्मी आदि सबकी आँखों में आँसू आ जाते हैं।)

(सब उठ जाते हैं, सुयशा भी धीरे-धीरे अपने आप चुप हो जाती है।)

(दो-चार दिन सामान्य से बिना किसी चर्चा के बीत जाते हैं।) अर्थात् किसी ने इस विषय की चर्चा नहीं की, एक दिन फिर सब बैठते हैं, ऐसे ही बात चलते-चलते सुयशा के ससुराल की बात छिड़ जाती है।

सेठजी : सुयशा तुम्हारी ससुराल कैसी है ?

सुयशा : पापा, मेरी ससुराल के बारे में कुछ मत पूछो। शायद नरक में भी इतने दु:ख नहीं होंगे, जितने मेरी ससुराल में हैं। कहने का मतलब मेरी ससुराल तो एक प्रकार से मध्यलोक का नरक है।

सेठानी : बेटी, तुम्हारे ससुर कैसे हैं ?

सुयशा : मम्मी, ससुर तो नाम के हैं, वे तो पूरे राक्षस हैं-राक्षस। राक्षस तो अच्छा होता है, लेकिन वे तो ऐसे राक्षस है कि कच्चे ही निगल जाते हैं।

भैया : दीदी, आपकी मम्मीजी कैसी है ?

सुयशा : अरे भैया! तुम उसको मम्मी नहीं कहो, वो पूरी डायन है, लगता है, मेरे पूर्व भव की बैरिन है, बैरिन जब देखो झगड़ने के लिए तत्पर रहती है।

बहिन : दीदी, आपकी दीदी तो बहुत अच्छी हैं, उससे तो आपकी बहुत दोस्ती है।

सुयशा : अरे रिनि! वो रानू तुझे अच्छी लगती है जो कि पक्की लड़ाकू और चुगलखोर है। अरे हमारे घर में लड़ाई की जड़ तो वो ही है, वो ही तिल का ताड़ बनाती है, छोटी-सी बात को नमक-मिर्ची डालकर ऐसी पार्सल करती है कि घर में झगड़ा मच जाता है।

भाभी : दीदी, आपके देवर बबलू तो वैसे ही घर में नहीं आ पाते हैं, वो तो कभी आपके काम में इन्टर-फेयर नहीं करते होंगे, वे तो बहुत अच्छे हैं।

सुयशा : वाह! भाभी वाह, आपने भी बबलू को विनीत समझा क्या जो इतनी प्रशंसा कर रही हो, वो बबलू नाम तो बबलू है लेकिन है पूरा एक नम्बर का झूठा और मक्कार। मैंने तो उसको सत्य बोलते कभी देखा ही नहीं है।

अनन्त : सुयशा, मुझे तो तुम यह बताओ कि हमारे लालाजी कैसे हैं?

सुयशा : बड़े भैया! अरे उसको लालाजी नहीं कहो, लाला तो बड़े प्यार का नाम है, लेकिन वो तो पूरा यमराज है। अरे एक दिन कह रहा था, मेरी मम्मी की सेवा करो, बबलू-रानू के कपड़े धोओ, झाड़ू लगाओ, मैं क्या कोई सबकी नौकरानी हूँ, उसने तो मुझे पूरी बिना पैसे की नौकरानी ही समझ लिया।

सेठ : बेटी तुम्हारे अड़ोस-पड़ोस कैसे हैं?

सुयशा : पापा, मुझे तो लगता है कि वहाँ का पानी ही ऐसा है कि जो भी वहाँ का पानी पीता है, उसका स्वाभाव ऐसा हो ही जाता है, इसलिए मुझे अड़ोस-पड़ोस तो क्या पूरे गाँव के लोग ही दुष्ट, पापी, लफंगे और बदमाश लगते हैं।

(सेठजी उसकी बातें सुनकर मन ही मन में सोचते हैं कि ससुराल

का एक व्यक्ति खराब हो सकता है दो खराब हो सकते हैं, सभी के सभी खराब हैं। यहाँ तक गाँव के सभी लोग खराब हों, ऐसा कैसे हो सकता है ? इसकी बातों से तो लगता है कि शायद ये ज्यादा लड़ती होगी आदि सोचते हुए उठ जाते हैं।)

(एक दिन केवल सेठ-सेठानी और सुयशा बैठकर बातें कर रहे थे। बातों ही बातों में सेठजी सुयशा से पूछ बैठते हैं।)

सेठ : बेटी तुम ससुराल में कितने बजे उठती हो?

सुयशा : पापा मैं उठ जाती हूँ लगभग साढ़े सात-पौने आठ बजे तक (जब तक कि बबलू, रानू आदि नाश्ता कर चुके होते हैं और पापाजी नाश्ता करने वाले होते हैं, मैं भी उठाकर नाश्ता कर लेती हूँ।)

सेठानी : बेटी तुम इतनी देर से उठती हो तो क्या तुम्हारी सास तुम्हें कुछ कहती नहीं है।

सुयशा : अरे मम्मी, वो कह कैसे सकती, वो यदि एक शब्द कह दें तो मैं सीधी दस गुना सुना देती हूँ, और वो भी इस ढ़ंग से कि आगे कभी कुछ कहने का साहस ही नहीं कर पायें तथा भाभीजी, दीदी आदि की भी चुप्पी बनी रहे।

सेठ : (सुनकर आश्चर्य करता हुआ) तो क्या तू लालाजी के साथ भी ऐसा ही व्यवहार करती हो ?

सुयशा : ओ, पापाजी, उनके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करूँ तो क्या उनकी पूजा करूँ। उसने मेरे से शादी की है तो मेरी बात भी माननी पड़ेगी। मैंने उससे शादी कर ली इसका अर्थ यह नहीं कि मैं उसकी नौकरी करती रहूँ। वे कुछ कहकर देखें तो। एक-दो बार कहा था तो मैंने ऐसा लथेड़ा कि बेचारे चुप्पी पकड़कर बैठ गये।

(बेटी की बातें सुनकर सेठ-सेठानी समझ गए कि बेटी को अति लाड़ प्यार से रखने का ही दुष्फल है)

(कुछ दिन के बाद लालाजी लेने आते हैं।)

ऋषीश : जयजिनेन्द्र पापाजी जयजिनेन्द्र।

सेठजी : जयजिनेन्द्र लालाजी जयजिनेन्द्र।

बड़े भैया : जयजिनेन्द्र लालाजी जयजिनेन्द्र।

(कहते हुए ऋषीश को हाथ पकड़कर बैठक में ले जाते हैं)
(ऋषीश जयजिनेन्द्र करते हुए बड़े भैया के साथ बैठक में जाता है)
(बड़ा भैया ऋषीश को कुर्सी पर बैठाता है तब तक छोटी बहिन, छोटा भैया और मम्मी भी बैठक में आ जाती है।)

छोटी बहिन :
जीजाजी, जीजाजी करती हुई ऋषीश की गोदी में बैठ जाती है।

छोटा भाई :
जीजाजी, जीजाजी करता हुआ ऋषीश के साथ बातें करने लगता है।

छोटा भाई :
जीजाजी आप अच्छे हो, आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

छोटी बहिन :
जीजाजी, अबकी बार तो हम आपकी बहुत जेब खाली करवाएंगे।
(थोड़ी देर बातें करते हैं, उसके बाद ऋषीश फ्रेश होकर सबके साथ नाश्ता करता है। लगभग 11 बजे सभी भोजन करते हैं। भोजन के बाद ऋषीश जाने के लिए कहता है सभी जन रोकते हैं।)

सेठजी : बेटी सुयशा तैयारी कर लो, लालाजी लेने आ गए हैं। आज ही जाने की कह रहे थे लेकिन आज तो हम विदा नहीं करेंगे। लेकिन कल तक तो जाना ही होगा।

सुयशा : नहीं, पापा, मैं नहीं जाऊँगी, मुझे ससुराल नहीं जाना। मैं तो यहीं रहकर आपकी सेवा करूँगी।

सेठजी : (प्यार से) बेटी, ऐसा नहीं कहते, ससुराल तो अपना ही घर है, वहीं अपने को जीवन भर रहना है, बेटी तो ससुराल वालों की ही होती है देखो सभी लड़कियाँ ससुराल में ही रहती हैं, अपनी दीदी भी ससुराल में ही रहती है।

सुयशा : हाँ, पापा, दीदी की ससुराल बहुत अच्छी है, अपने जीजाजी कितने सज्जन आदमी हैं, मेरी भी ससुराल ऐसी होती है तो मैं

अवश्य ही ससुराल चली जाती (कहती हुए रोने लगती है।)

सेठानी : बेटी, ऐसा नहीं करते, समझदार बच्चे ऐसा थोड़ी करते हैं, आज तो हम हैं सो कुछ, हमारे जाने (मरने)के बाद तुम कैसे इस घर में रहोगी। क्या भैया तुम्हें जिंदगी भर रख लेगा ? जब तुम अपनी ननद (रानी) से अच्छी तरह बोल भी नहीं सकती हो तो तुम्हारी भाभी तुम्हें जिंदगी भर अपने घर में कैसे रख लेगी ? थोड़ा सोचो।

सुयशा : हाँ मम्मी, मैंने सब कुछ सोच लिया है मैं भले ही यहाँ भूखी रह लूँ, किसी के घर पानी भर दूँगी, रोटी बनाने का काम कर लूँगी लेकिन वहाँ नहीं जाऊँगी।

सेठानी : (मन में सोचती हुई देखो तो मूर्ख अपनी ससुराल में थोड़ा-सा काम करने में आलस आता है और लगता है कि मैं नौकरानी हूँ क्या और यहाँ पानी भर देगी, रोटी बनाने चली जायेगी।)
(गुस्से में) नहीं, बेटी तुम जिद नहीं करो, तुम्हें ससुराल जाना है, नहीं जाओगी तो हम जबरन तुम्हें ससुराल भेजेंगे और सुनलो वापस कभी बुलाएँगे भी नहीं।

सुयशा : (सिसक-सिसक कर रोने लगती है) नहीं मम्मी, नहीं मैं नहीं जाऊँगी।
(आखिर उसकी जिद और रोना देखकर सबका दिल दहल जाता है, सेठजी ऋषीश से कह देते हैं कि अभी सुयशा की तबीयत थोड़ी नरम है और बहुत दिनों के बाद आयी है, अभी आये भी थोड़े से दिन ही हुए हैं, इसलिए अभी हम उसको नहीं भेजेंगे)

ऋषीश : पापाजी बार-बार आने का समय नहीं मिल पाता है, इसलिए आप अभी भेज दीजिए, फिर सुयशा कोई छोटी बच्ची तो है नहीं सो बहुत दिनों तक पीहर में बैठी रही।

सेठजी : हाँ, ऋषीश, सुयशा छोटी बच्ची तो नहीं लेकिन फिर भी अभी उसका मन भरा नहीं है, इसलिए थोड़े दिन और रहने दीजिए। इसी बहाने आपसे फिर मिलना हो जायेगा।

(ऋषीश सेठजी की बात मान लेता है और अपने घर चला जाता है)

(एक दिन सुयशा की बड़ी बहिन यशस्वी सुयशा से मिलने आती है। जीजाजी, दीदी के बच्चे-बच्ची भी साथ आते हैं।)

यशस्वी : बहिन सुयशा, तुम तो बहुत दुबली हो गयी हो। मैंने सोचा था ससुराल से आयी हो सो अच्छी तगड़ी हो गई होगी।

सुयशा : हाँ दीदी, सभी की ससुराल आपकी ससुराल जैसी नहीं होती और सभी लड़के जीजाजी जैसे खुशमिजाज नहीं होते।

यशस्वी : ऐसा कुछ नहीं सुयशा बाहर और दूसरों के सामने तो सभी अच्छे ही लगते हैं लेकिन फिर भी कहावत है कि ''आप भला तो जग भला'' अपन अच्छे हैं अपना व्यवहार अच्छा है तो पूरी दुनिया अच्छी है।

सुयशा : हाँ, हाँ दीदी बात तो सही है लेकिन फिर भी एक हाथ से ताली कहाँ बजती है अपन कितने ही अच्छे क्यों न हो सामने वाला अपने को अच्छा स्वीकार ही नहीं करें तो क्या किया जाय।

(बीच में ही दीदी के बच्चे ऋषभ और मुदिता आकर सुयशा से लिपटते हुए)

ऋषभ : मौसी-मौसी आप अच्छी हो, आपकी ससुराल अच्छी है।

मुदिता : (चरण स्पर्श करती हुई) मौसी-मौसा जी कैसे हैं?

सुयशा : (दोनों को प्यार करती हुई गोदी में बैठा लेती है) हाँ बेटा ऋषभ आओ मुदिता तुम दोनों अच्छे हो, तुम्हारा रिजल्ट आ गया क्या, कितने प्रसेन्ट बने हैं।

ऋषभ और मुदिता दोनों एक साथ-

मौसी मेरे 99 प्रसेन्ट हैं और मेरे 90 प्रसेन्ट बने हैं।

सुयशा : बहुत अच्छा, तुम लोग तो पढ़ने में बहुत होशियार हो।

(तभी जीजाजी और बड़े भैया आ जाते हैं।)

जीजाजी : सुयशा तुम बहुत उदास लग रही हो, अरे पहली बार तो ससुराल से आयी हो, इतनी दुबली भी हो गयी और तुम्हारे चेहरे की तो रौनक ही चली गयी।

सुयशा : (कृत्रिम हँसी हँसती हुई) नहीं, जीजाजी ऐसी कोई बात नहीं, आपको तो मैं हमेशा ही दुबली और उदास दिखती हूँ।

जीजाजी : नहीं, सुयशा अबकी बार तो तुम ज्यादा ही उदास लग रही हो ऐसा लगता है, तुम्हें ससुराल पसन्द नहीं आयी है।

सुयशा : पसन्द-वसन्द क्या ? संसार में अपनी पसन्द का मिलता ही किसको है ? यदि संसार में सब काम अपनी पसन्द का हो जावे तो हमारे महापुरुष घर छोड़कर तपस्या ही क्यों करें ? क्यों मोक्ष का पुरुषार्थ करें, क्यों मोह-ममता छोड़ वन में रहें ?

जीजाजी : वाह रे वाह, आजकल तो तुम्हें बहुत अध्यात्म आने लगा है, तुम तो ऐसी बातें कर रही हो, जैसे कि तुम्हें पूरा वैराग्य ही आ गया हो, क्या सच में तुम्हें वैराग्य आ गया है?

सुयशा : अरे जीजा जी, आप भी कैसी बातें करते हो, वैराग्य क्या कोई सामान्य चीज है, जो जब कभी आ जावे। वैराग्य तो बहुत दुर्लभ है कोई भाग्यशाली बड़ा पुण्यवान जीव होता है जो पूर्व भव में तपस्या करके आया है उसे वैराग्य आता है सबको नहीं, मैं इतनी पुण्यशाली कहाँ हूँ।

बीच में ही विनीत आता है और श्लो स्पीड में कहता है, चलो चलो सब जनों को मम्मी भोजन के लिए बुला रहीं हैं। बड़े जीजाजी, छोटी दीदी, ऋषभ, मुदिता, ऋषभ की मम्मी, बड़े भैया सबको मम्मी भोजन के लिए बुला रहीं हैं।

यशस्वी : छोकरे, मुझे दीदी नहीं कह सकता, ऋषभ की मम्मी कह रहा है।

विनीत : (हँसकर)अच्छा-अच्छा बड़ी दीदीजी आपको आपकी मम्मी भोजन के लिए बुला रहीं हैं।

यशस्वी : (बड़बड़ाती हुई) बदमाश कहीं का मेरी मम्मी बुला रही हैं, कहती हुई कमरे से बाहर निकल जाती है (सब लोग भोजन के लिए पहुँच जाते हैं, सब भोजन करके दोपहर में थोड़ा रेस्ट करते हैं।)

यशस्वी : सुयशा-ऋषीश लेने आए थे, तुम गई क्यों नहीं ?

सुयशा : हाँ दीदी, नहीं गयी मुझे नहीं जाना ससुराल, मुझे वहाँ बिल्कुल

अच्छा नहीं लगा, मेरा तो वहाँ एक सेकेण्ड भी मन नहीं लगा।

यशस्वी : क्यों, क्या ससुराल वाले अच्छे नहीं हैं ?

सुयशा : अच्छे-बुरे क्या बताऊँ ? हैं सो हैं, उनको तो किसी की उपमा नहीं दी जा सकती।

यशस्वी : फिर भी ऐसी क्या बात है कि तुम्हारा मन नहीं लगा, क्या ऋषीश का स्वभाव बहुत तेज है ?

सुयशा : तेज-मेज तो नहीं है लेकिन मम्मी और रानू की बातों में आ जाते हैं इसलिए झगड़ा मच जाता है।

यशस्वी : तुम बोलती क्यों हो, सामने वाला कुछ भी कहें, कितना ही कहें, यदि हम मौन रख लें पलट कर जवाब नहीं दें, झगड़ा बढ़ ही नहीं सकता। मेरी मम्मीजी भी कई बार बिना गलती के ही मुझे बहुत डाँट देती हैं, उल्टा-सुल्टा मन भाये सो कह देती हैं, लेकिन मैं यही सोचकर चुप रहती हूँ कि मेरी मम्मी भी तो कई बार बिना गलती के डाँट देतीं थीं, दूसरों का गुस्सा मेरे ऊपर निकाल देतीं थीं, ये भी मेरी मम्मी हैं कह दिया तो क्या हो गया कुछ नहीं।

सुयशा : नहीं, दीदी आपकी मम्मी तो बहुत अच्छी हैं।

यशस्वी : हाँ, जब हमेशा पास रहो तब समझ में आता है कि अच्छी हैं कि खराब।

सुयशा : दीदी, आप पास रहने की बात करती हो अपनी भाभी क्या अपनी मम्मी के पास हमेशा नहीं रहती है, लेकिन वो कभी नहीं कहती मेरी सास अच्छी नहीं है।

यशस्वी : अरे सुयशा, तू तो सच में भोली है, क्या भाभी तेरे और मेरे सामने कहती कि मम्मी अच्छी नहीं हैं, फिर अपनी भाभी भी तो कितनी अच्छी हैं, मम्मी कितना भी कुछ कह दें फिर भी कभी पलटकर जवाब नहीं देती है, कड़वी से कड़वी बात को भी हँसी में टाल देती है, तभी तो मम्मी हमेशा उसकी प्रशंसा करती है।

सुयशा : (व्यंग्य से) वा दीदी वाह आप तो वास्तव में बड़ी अनुभवी हो, क्या पहचान की आपने भी अच्छी बुरी लड़कियों की।

यशस्वी : सुयशा, इसमें हँसने की कोई बात नहीं है, न कोई व्यंग्य करने की

बात है जो अच्छा होगा उसे तो अच्छा कहना ही होगा और तुम्हें भी भाभी जैसा ही बनना चाहिए।

सुयशा : (गुस्से में) चलो दीदी अब ज्यादा उपदेश नहीं दो, मैं जानती हूँ, तुम और तुम्हारी भाभी कितनी अच्छी हैं और तुम कितने गहरे पानी में हो।

(यशस्वी सुयशा का मूड़ बदलता देख खिसक जाती है।)

(एक दिन सुयशा बाजार जा रही थी रास्ते में सहेली नन्दिनी मिल जाती है, वह उसे अपने घर ले जाती है। सुयशा बिना इच्छा के अपनी सहेली के घर जाती है। सहेली की माँ मनोवती एक बहुत तेज और स्पष्टवादी नारी है।)

नन्दिनी : बहिन, आज तो ऐसा लग रहा है कि वर्षों-वर्षों के बाद मित्र-मिलन सम्बन्धी स्वर्ग का सुख प्राप्त हो रहा है।

सुयशा : हाँ बहिन, मुझे भी आज बहुत अच्छा लग रहा है, तुम्हारे से मिलकर ऐसा लग रहा है कि आज वह बचपन पुनः लौट आया हो।

(बीच में सहेली की मम्मी मनोवती आती है।)

मनोवती : बेटी सुयशा, तुम बहुत दिनों से आई हो, अभी बीच में एक दिन ऋषीश को भी देखा था। मैंने सोचा शायद तुम चली गयी होगी लेकिन .... (कहते-कहते रुक जाती है।)

(सुयशा मनोवती की बात सुनकर अन्दर ही अन्दर तिलमिला जाती है)

फिर भी हँसती हुई कहती है। हाँ, मम्मी आये थे लेकिन मेरी तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए नहीं जा पाई।

(मनोवती की बात से सुयशा का मन बहुत खराब हो जाता है वह बहाना बनाकर चली जाती है। घर जाकर सुयशा छुपकर कमरे में बैठी रो रही है। तभी यशस्वी वहाँ पहुँच जाती है)

यशस्वी : (सिर पर हाथ फेरते हुए) सुयशा, ओ मेरी प्यारी बहिन क्यों रो रही हो? आज तुमको किसने क्या कह दिया ? थोड़ी देर पहले तो तुम खुशी-खुशी बाजार गई थी और अभी-अभी क्या हो गया ?

मैं अपनी बहिन को रोते नहीं देख सकती, क्या हो गया बताओ, बताओ ना ?

(सुयशा बहिन का प्रेम भरा हाथ और प्यार की बातें सुनकर और ज्यादा फूट-फूटकर रोने लगती है। यशस्वी बहुत मनाती है लेकिन सुयशा कुछ भी उत्तर नहीं देती है। तब तक सेठजी आ जाते हैं, सेठजी भी सुयशा से रोने का कारण पूछते हैं, बहुत पूछने के बाद)

सुयशा : पापाजी, आज मैं नन्दिनी के यहाँ गई थी। नन्दिनी की मम्मी ने व्यंग्य करते हुए कहा कि मैं ससुराल क्यों नहीं गयी ? मुझे उनकी बात बहुत बुरी लगी।

सेठजी : बेटी, नन्दिनी की मम्मी ने क्या गलत कहा, तुम ससुराल नहीं गयी तो पूछ लिया कि तुम ससुराल क्यों नहीं गई ? और तुम ससुराल नहीं जाओगी तो हमेशा ही लोग तुम्हें व्यंग्य करते रहेंगे, तुम कब तक रोती रहोगी? इसीलिए तो हम कहते हैं कि तुम ससुराल चली जाओ वहीं रहो, अपने आप को ढालो, थोड़ा गम खाओ, आराम से जीवन व्यतीत होगा लेकिन तुम हो सो मानती ही नहीं हो। अपनी जिद नहीं छोड़ती हो तो रोना ही पड़ेगा।

यशस्वी : हाँ, सुयशा पापा बिल्कुल ठीक कह रहे हैं, अब जब भी ऋषीश लेने आये तो चली जाना। थोड़ा अपने आपको संयमित रखना पलटकर जवाब मत देना निश्चित तुम्हारा जीवन सुखमय बनेगा।

सुयशा : नहीं-नहीं दीदी, मैं वहाँ नहीं जा सकती, वे लोग बिल्कुल अच्छे नहीं है मुझे तो वहाँ नरक जैसा लगता है, उनको बोलने की भी तमीज नहीं है, वे मुझे नहीं निभा सकते। नहीं मैं नहीं जाऊँगी।

यशस्वी : (प्रेम से) सुयशा ऐसा नहीं करते, जो अच्छे लोग होते हैं, वे बुरे से बुरे व्यक्तियों को भी अच्छा बना लेते हैं, अपना बना लेते हैं तुम भी अपने व्यवहार से उनको अपना बना लेना तुम सुखी हो जाओगी। देखो, नन्दिनी की ससुराल कैसी है ? पता है, उसकी सास पूरे दिन डण्डा लेकर पीछे ही लगी रहती है। बेचारी कितना ही अच्छा काम करे बुराई ही करती रहती है तो भी वो कभी मुँह

नहीं बनाती जवाब नहीं देती तभी तो आजकल कितनी लाइन पर आ गई है अर्थात् कभी-कभी बहू की प्रशंसा करने लगी है।

(तभी नन्दिनी आ जाती है। जयजिनेन्द्र करती हुई) जयजिनेन्द्र सुयशा, जयजिनेन्द्र दीदी, पापाजी जयजिनेन्द्र। सुयशा खड़ी होकर जयजिनेन्द्र करती हुई हाथ पकड़कर अपने पास बैठाती है।

नन्दिनी : सखी सुयशा, मैं तुम्हारे से क्षमा माँगती हूँ, मेरी मम्मी ने तुम्हें कड़वी बात कह दी थी।

सुयशा : नहीं, नहीं नन्दिनी ऐसी कोई बात नहीं है, तेरी मम्मी ने कोई गलत थोड़ी कहा था। फिर बुरा मानने की क्या बात है ? उसने मेरे हित के लिए ही तो कहा था।

नन्दिनी : हाँ, कहा तो हित के लिए ही था लेकिन कड़वा तो था ही न। मैं तो कब से सोच रही थी कि तेरे को कुछ समझाऊँ लेकिन...

सुयशा : लेकिन क्यों नन्दिनी क्या तुम मुझे अपनी नहीं मानती हो जो लेकिन लगा रही हो..................

नन्दिनी : मैंने जब सुना था कि तुमने ससुराल जाने से मना कर दिया तो मुझे बहुत विकल्प हो रहा था।

सुयशा : क्यों, उसमें विकल्प की क्या बात है, मैं पापा के यहाँ रहूँगी उनकी सेवा करूँगी और थोड़े ही दिनों में मेरी सर्विस लग जायेगी, फिर तो आराम ही आराम। फिर मेरे भैया-भाभी भी बहुत अच्छे हैं, इसलिए यहाँ रहने में कोई तकलीफ भी नहीं होगी।

नन्दिनी : हाँ, बहिन भैया-भाभी तब तक अच्छे होते हैं, जब तक कि दीदी (ननद) मेहमान बनकर आती है, जब दीदी हमेशा के लिए घर में रहने लगती है तब भैया-भाभी का व्यवहार कुछ और ही हो जाता है। कहावत भी है-''पहले दिन के पाहुने दूसरे दिन की पई और तीसरे दिन नहीं गए तो बुद्धि मारी गई'' जब वे कुछ ही दिनों में ये कहावत चरितार्थ करने लगते हैं, तब समझ में आता है कि मैंने ससुराल छोड़कर कितना गलत काम किया है।

सुयशा : हाँ (गंभीर चिंतन के साथ-साथ) नन्दिनी लगता तो मुझे भी कभी-कभी ऐसा ही है लेकिन क्या करूँ, मेरी ससुराल का कोई

सदस्य ही अच्छा नहीं है, जिसके बल में ससुराल में रह लूँ।

नन्दिनी : (सुयशा का हाथ पकड़कर) नहीं सुयशा ऐसा कुछ नहीं है, विनय, नम्रता एक ऐसा गुण है, जो दुश्मन को भी झुका देता है तो ससुराल वाले तो अपने दुश्मन भी नहीं हैं, वे क्यों नहीं झुक सकते हैं, दुनियाँ जानती है कि भक्ति (विनय) से तो भगवान् भी झुक जाते हैं।

सुयशा : नन्दिनी, तुम बिल्कुल सच कह रही हो, मेरे मम्मी-पापा, दीदी आदि ने भी मुझे यही समझाया लेकिन मैं कुछ निर्णय नहीं कर पा रही हूँ कि आखिर मैं क्या करूँ? क्या मेरे ससुराल वाले अब मेरे साथ अच्छा व्यवहार कर सकते हैं। क्या मेरे व्यवहार में परिवर्तन देखकर वे मुझे प्यार से गले लगा लेंगे ?.....

नन्दिनी : अरे सुयशा, तुम इतना सोचती ही क्यों हो, यदि उनको तुम्हारी आवश्यकता नहीं होती तो क्यों वे ऋषीश को लेने भेजते और क्यों ऋषीश उनकी बात मानकर लेने आता।

(सुयशा की आँखों में आँसू आ जाते हैं, वह रोने सी लगती है नीचे सिर झुकाकर गुम-सुम हो जाती है उसे देखकर नन्दिनी बात पलटती हुई कहती है।)

नन्दिनी : कितनी देर हो गई मुझे आये, तुमने अभी तक नाश्ते के लिए तक नहीं पूछा, क्या तुम मुझे नाश्ता भी नहीं करवाओगी, मैंने तो सोचा था सुयशा की दीदी आई हुई है, चलो आज अच्छे माल मिष्ठान्न खाने को मिलेंगे।

(सुयशा को हँसी आ जाती है वह विनीत को आवाज लगाती है)

सुयशा : विनीत, ओ विनीत इधर आओ।

नन्दिनी : अरे सुयशा, तुमने तो सच ही समझ लिया मैं तो मजाक कर रही थी, मैंने अभी 12 बजे ही तो भोजन किया था, मैं तो टंकी फुल करके आई हूँ।

सुयशा : (तब तक विनीत आ जाता है)

भैया विनीत, जो कल घेवर, जलेबी नमकीन बनाया था और

आज सुबह जो मालपुए बनाये थे सब ले आओ अपन आज नन्दिनी दीदी को पूरी चीजें खिलाएँगे।

(नन्दिनी सुयशा के साथ नाश्ता करके अपने घर चली जाती है, सुयशा बिस्तर में लेटी-लेटी विचार कर रही है, रात के लगभग 12 बजने वाले हैं, उसको नींद नहीं आ रही है, वह करवटें बदल रही है, वह विचार करते-करते सिसकी भर-भरकर रोने लगती है, तभी भैया जो बाहर गाँव गए थे, आकर दरवाजा खटखटाते हैं, भाभी उठकर दरवाजा खोलती है, तभी उसे सुयशा की सिसकी सुनाई देती है। वह अपने पति (बड़े भैया) को लेकर सुयशा के रूम में जाती है सुयशा का चादर उघाड़ती हुई कहती है।

भाभी : दीदी, ओ दीदी आप क्यों रो रही हो ? रात के 12 बज गए अभी तक आप सोई नहीं (सुयशा के आँसू पोछते हुए।) मेरी दीदी रोओ नहीं, तुम क्यों रो रही हो, तुम्हें किसकी चिंता है ?

सुयशा : (आँसुओं को छुपाती हुई) नहीं, भाभी कुछ नहीं हुआ अभी-अभी नींद खुल गई थी, कुछ ऐसे ही विचार आ गए जिससे रोना आ गया।

बड़े भैया : बहिन सुयशा, सच-सच बताओ तुम्हें क्या हो गया? मेरे रहते हुए तुम्हें कुछ भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है न रोने की मैं तुम्हें कुछ भी तकलीफ नहीं होने दूँगा।

सुयशा : (फूट-फूटकर रोती हुई) भैया, मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूँ, भाभी तुम बताओ मैं क्या करूँ ?

भाभी : दीदी आप चिंता मत करो, एक बार आप ससुराल जाने का विचार बनाओ, एक बार जाकर देखो, सब अच्छा हो जायेगा। आप अबकी बार णमोकारमंत्र का जाप करके जाना, अपने आप सब अच्छे हो जायेंगे।

सुयशा : हाँ, भाभी अब मैं आपके कहे अनुसार अपना मानस तैयार कर लूँगी।

(भैया-भाभी अपने कमरे में जाकर सो जाते हैं, सुयशा भी निश्चिंत सी टेंशन फ्री होकर सो जाती है)

(एक दिन ऋषीश फिर से सुयशा को लेने आता है) सुयशा सहज रूप से ऋषीश के साथ ससुराल चली जाती है।

(ससुराल में कोई भी सुयशा से नहीं बोलता है, न कोई रिस्पेक्ट देता है, न भोजन आदि के लिए पूछता है फिर भी सुयशा कोई विकल्प नहीं करती है, उसने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया था कि कुछ भी हो, मैं अब बिल्कुल गुस्सा नहीं करूँगी।)

(सुयशा चुपचाप घर का काम करती रहती है।)

दूसरे दिन प्रातःकाल जल्दी उठकर सुयशा ऋषीश से जयजिनेन्द्र करती है और ऋषीश भी जयजिनेन्द्र करता है सुयशा प्रसन्न होकर कमरे में तथा बाहर झाडू लगाती है एवं माँ के चरणस्पर्श करती है।

सुयशा : (माँ के चरणस्पर्श करते हुए) माँ, मुझे आशीर्वाद दो मेरा आज का दिन शांति तथा प्रेम के साथ व्यतीत हो और मैं पूरे दिन खुश रहूँ।

सास : (आश्चर्यचकित हो)आशीर्वाद देती है, आशीर्वाद पाकर बहू खुश हो जाती है।

(सुयशा सेठजी के भी चरणस्पर्श करती है)

सेठजी : (आशीर्वाद देते हैं)बेटी हमेशा-हमेशा इसी प्रकार खुश रहो, सबकी लाडली बनो, धर्म करो और आनन्द से शतायु होओ।

(सेठजी का आशीर्वाद प्राप्त कर सुयशा अन्दर-अन्दर अपने भाग्य को सराहने लगी अब निश्चित मेरा जीवन सुखी हो जायेगा।)

रानू : छोटी भाभी क्या आज तुम्हें नींद नहीं आई तुमने इतनी जल्दी उठकर इतना सारा काम कर लिया, क्या किसी ने मंत्र-तंत्र तो नहीं कर दिया है?

सुयशा : दीदी रानू, सच मेरे पास एक मंत्र है, जिसके प्रभाव से मेरा गुस्सा बहुत कंट्रोल हो गया है।

रानू : भाभी मुझे भी बताओ कौन-सा मंत्र है।

(सुयशा हँसकर बात टाल देती है।)

सुयशा : (रसोई में मम्मी भोजन बना रही है।)

मम्मीजी आप भोजन कर लीजिए मैं भोजन बना लूँगी।

सास : आहा, सुयशा आज तुम भोजन बनाने कैसे आ गई हो ? नींद में हो या जाग रही हो या सपने में रोटी बनाने के लिए कह रही हो।

(सुयशा कुछ नहीं बोलती है चुपचाप हाथ जोड़े खड़ी रहती है)

सास : चलो पहले बाथरूम साफ करो, कपड़े धोओ, पौंछा लगाना सीखो, उसके बाद रोटी बनाना।

(सुयशा चुपचाप बाथरूम की सफाई में लग जाती है, लगभग 12 बज जाते हैं सेठानी, रानू, बड़ी भाभी आदि सब भोजन कर लेते हैं, लेकिन सुयशा को कोई भोजन करने के लिए नहीं कहता, वह घर का काम करती रहती है तभी ऋषीश दुकान से आता है सुयशा को देखकर.......)

ऋषीश : सुयशा भोजन कर लिया ?

(सुयशा मुस्कराकर अपने काम में लगी रहती है।)

ऋषीश : 12 बज गए अभी तक तुमने भोजन नहीं किया ?

सुयशा : (हँसते हुए) मेरे प्राणनाथ ने भोजन नहीं किया तो मैं भोजन कैसे कर सकती हूँ। भारतीय नारी भी क्या अपने पति के पहले भोजन कर सकती है ?

ऋषीश : अच्छा-अच्छा तो आप अब एक पतिव्रता नारी हैं तो क्या पतिव्रता नारी अपने पति को अपने हाथों से भोजन नहीं करवाती।

सुयशा : क्यों नहीं करवाती, यह तो उसके जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य होता है कि वह अपने हाथ से भोजन बनाकर पति को परोसती है।

ऋषीश : अच्छा ऐसी बात है तो रानी जी चलिए आज मैं आपके हाथ का ही भोजन करूँगा।

(सुयशा रसोई में चली जाती है ऋषीश भी फ्रेश होकर भोजन करने बैठता है।)

ऋषीश : (रोटी का ग्रास मुख में रखते हुए।) वाह, आज के भोजन का स्वाद तो गजब ही है, आज इस भोजन में क्या मिला दिया तुमने?

सुयशा : मैं भोजन में मिला ही क्या सकती हूँ मेरे पास है ही क्या (विनय) जो मिला देती।

ऋषीश : तुम्हारे पास क्या नहीं है, जो तुम्हारे पास है वह चीज तो बहुत कम लोगों में मिलती है, उसी के कारण तो भोजन का स्वाद ही बदल गया है।

सुयशा : अरे जी, क्यों हँसी करते हो मेरी और यदि हँसी नहीं है तो सच्ची बताओ, आप कौन-सी चीज के लिए कह रहे हैं।

ऋषीश : सुयशा तुम्हारे भोजन में मुझे प्रेम का स्वाद आ रहा है।
(दोनों हँसते हुए प्रसन्नता से भोजन समाप्त करते हैं।)
(कुछ दिनों तक थोड़ा-थोड़ा घर का माहौल सुधरता गया।)
(एक दिन सुयशा के हाथ से पानी का घड़ा छूट गया, जिससे घड़े में मोंच आ गई)

सेठ जी : बहू सुयशा, तेरे से कुछ काम अच्छे होते भी हैं या नहीं, जब देखो कुछ पटक दोगी, कुछ तोड़ दोगी लापरवाही से कितना नुकसान करती रहती हो। किसी चीज की कोई चिंता ही नहीं है मुझे तो तेरे में अंधाधुंध काम बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं, थोड़ा तो विवेक से काम करा करो।

सुयशा : (हाथ जोड़कर) जी पापाजी, अब ध्यान से काम करूँगी, अब ऐसी गलती नहीं करूँगी। इसी प्रकार से सुयशा किसी भी बात का कभी भी उल्टा- सीधा उत्तर नहीं देती है और न ही किसी के टोक देने पर बुरा मानती है।
(फलतः धीरे-धीरे वह सबकी लाडली और मान्य बहू बन जाती है। सब लोग उसको बहुत चाहने लगते हैं, धार्मिक कार्यक्रमों में भी उपस्थिति और सक्रियता को देख समाज भी उसको सम्मान देने लगती है।)
(एक दिन सुयशा के बड़े भैया लेने आते हैं समाचार मिलते ही ऋषीश बबलू बस स्टेण्ड पर लेने जाते हैं और सम्मान पूर्वक घर पर लेकर आते हैं)

ऋषीश : भाई साहब, आप तो हमारे घर पर पहली बार आये हैं आपको

कैसा लग रहा है हमारा घर ?

बड़े भैया : घर तो मिट्टी चूने का बना होता है उसका महत्त्व ही क्या, महत्त्व तो उसमें रहने वाले व्यक्तियों का है, जिनमें प्रेम तथा अपनत्व होता है ।

ऋषीश : हाँ, बिल्कुल सही बात है तो क्या आपको हमारा प्रेम समझ में नहीं आ रहा है।

बड़े भैया: (ठहाका लगाते हुए) वाह ऋषीश क्या कही तुमने, आपका प्रेम समझ में नहीं आता तो मैं उल्टे पैर बसस्टेण्ड से ही लौट जाता। बातें करते हुए सब भोजन करते हैं। उसके बाद बड़े भैया सुयशा को भेजने के लिए कहते हैं।

रानू : भैया, अभी कुछ दिन पहले ही तो भाभी आपके यहाँ से आई हैं, आप फिर लेने आ गए।

बबलू : भैया, आप भाभी को ले जाओगे तो हमारा मन कैसे लगेगा पूरे घर में सूना-सूना लगेगा।

बड़े भैया : कैसी बातें करते हो कि सुयशा कुछ दिन पहले ही आई है अरे थोड़ा याद करो सुयशा को आये कितने दिन हो गए हैं ? सुयशा को आये 8 महीने हो गए, क्या अब भी हम लोगों को उसकी याद नहीं आयेगी।

सास : (आश्चर्य से) 8 महीने, नहीं-नहीं, आपकी गिनती गलत होगी, 8 महीने नहीं हुए होंगे। ज्यादा से ज्यादा भी हुए होंगे तो 2-3 महीने, इससे ज्यादा नहीं हो सकते।

बड़े भैया : वाह, मम्मी जी ने भी तो क्या बात कही, मम्मी जी भी तो आठ महीने को भी 2-3 महीने गिन रही है। गिनाते हुए- देखो जनवरी........ क्या चल रहा है अक्टूबर, कितने हो गए गिना ?
(सब हँसते हैं। बड़े भैया के बहुत कहने पर बिना मन के ससुराल वाले सुयशा को कुछ दिन के लिए पीहर भेजते हैं सुयशा भैया के साथ घर आ जाती है उसको बड़ी प्रसन्न देखकर....।)

पापा : सुयशा अबकी बार तो तुम बहुत प्रसन्न नजर आ रही हो बेटी!

सुयशा : हाँ, पापा स्वर्ग में जो रहकर आई हूँ, प्रसन्न क्यों नहीं होऊँगी ?

मम्मी : तो क्या तुम्हारा ससुराल स्वर्ग है ?

सुयशा : हाँ, मम्मी मध्यलोक का स्वर्ग तो है ही, जहाँ इन्द्र, सामानिक, लोकपाल, त्रायस्त्रिंश आदि सब हैं।

(सब जन हँसते हुए क्या बात कही है, सुयशा ने) सुयशा ने तो बिल्कुल रिकार्ड ही तोड़ दिया।

बड़े भैया: सुयशा तुम्हें सास कैसी लगती है ?

सुयशा : पूछो नहीं भैया, वो सास-मम्मी हैं या मम्मी मुझे तो उनसे इतना प्रेम मिलता है कि कभी मम्मी की याद ही नहीं आ पाती है। फिर भी मैं उन्हें देख-देखकर ही मम्मी को याद कर लेता हूँ।

विनीत : अच्छा, दीदी, बबलू कैसे हैं ?

सुयशा : विनीत, बबलू और तुममे कुछ अंतर ही नजर नहीं आता है बबलू को देखती हूँ तो तुम और तुम्हें देखती हूँ तो बबलू एक जैसे लगते हो।

भाभी : दीदी आप तो ये बताओ ऋषीश कैसे हैं ?

सुयशा : भाभी उनके लिए मैं कुछ उपमा ही नहीं दे सकती हूँ यो समझ लो वे इन्द्र हैं और मैं उनकी शचि।

(सब खिलखिलाकर हँसते हैं, विनीत जोर से ताली बजाकर हँसता है)

पापा : सुयशा, रानू कैसी है ?

सुयशा : पापा, रानू मेरी एक मित्र है, मेरी एक प्रिय सहेली है, मेरी एक दीदी, मेरी एक छोटी बहिन यानी उसमें तो सभी गर्भित हैं। मैं उसको देखती हूँ तो कभी नन्दिनी की याद आती है तो कभी दीदी यशस्वी की, कभी पड़ोस वाली सुशीला याद आती है तो कभी बाजू वाली आंटी।

इस प्रकार जब 8-15 दिन में ऋषीश फिर से सुयशा को लेने आता है तो उसी दिन मंदिर में एक प्रतियोगिता थी कि 'बहू कैसी हो?') सुयशा भी उसमें भाग लेती है वह समाज के सामने अपने जीवन की कुछ घटनाएँ बताती है और संदेश देती है कि मैं भी एक ऐसी बहू थी, जिसको ससुराल नरक जैसा लगता था, लेकिन

मम्मी-पापा, दीदी, भाभी और मेरी प्रिय सहेली नन्दिनी ने मुझे शिक्षा दी, मुझे समझाया, मैंने उसको अपने जीवन में अमल किया अबकी बार जब मैं ससुराल गई तो वही ससुराल मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव में आया, सभी माता-पिता, भाभी, दीदी को कहना चाहती हूँ कि सभी अपनी बेटी को अच्छी शिक्षाएँ दें। ससुराल को अपना समझने के लिए कहें तथा मेरी बहिनें और बहुएँ उनकी शिक्षाओं को अमल करके मेरे समान ससुराल में स्वर्ग का अनुभव करें।

समाप्त